# पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका : उत्तराखण्ड के विशेष सन्दर्भ में

***मीना आर्या**

मानव ईश्वर की सबसे अनोखी तथा सुन्दर रचना है। ईश्वर ने मानव को बनाया तथा उसके जीवन निर्वाह को सुगम करने हेतु उसे प्राकृतिक संसाधन प्रदान किये। इन्हीं प्राकृतिक संसाधनों के माध्यम से मानव अपनी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहा है। मानव ने इन्हीं प्राकृतिक संसाधनों तथा वातावरण को सम्मिलित रूप से पर्यावरण की संज्ञा दी है। 'पर्यावरण' शब्द की उत्पत्ति अन्य विभिन्न शब्दों की भांति संस्कृत भाषा से हुई है। 'पर्यावरण' संस्कृत भाषा के दो शब्दों 'परि' तथा 'आवरण' से मिलकर बना है, जिनका अर्थ क्रमशः 'चारों तरफ' तथा 'ढका हुआ' है। अतः इस प्रकार पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है– चारों तरफ से ढका हुआ। एक ऐसा पदार्थ तथा वातावरण जो कि विभिन्न वस्तुओं को चारों ओर से घेरता है और एक ऐसी परिस्थिति जो कि प्रकृति में उपलब्ध मानवोपयोगी पदार्थ तथा वातावरण को सुरक्षा प्रदान करती है, पर्यावरण कहलाता है। आदिकाल से ही मनुष्य तथा प्रकृति का अटूट संबन्ध रहा है। सभ्यता के विकास तथा विनाश में प्रकृति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विकास की प्रारम्भिक अवस्था में मानव ने सर्वप्रथम प्रकृति से अनुकूल करने का प्रयास किया फिर इसके पश्चात् उसने धीरे–धीरे प्रकृति में परिवर्तन करने का प्रयास किया परन्तु अपने इस विकास–क्रम में मनुष्य की बढ़ती हुई भौतिकवादी महत्वाकांक्षाओं ने पर्यावरण में इतना अधिक परिवर्तन कर दिया है कि मनुष्य और प्रकृति के बीच का सन्तुलन, जो कि धरती पर जीवन का आधार है, समाप्त होने की कगार में है। अत्यधिक असन्तुलन, अप्राकृतिक विकास, अधिक पाने की इच्छा, प्रकृति के नियम के विरूद्ध प्राप्त करने और कार्य करने की अभिलाषा ने पर्यावरण में समस्या और व्यवधान को जन्म दिया है। इसी व्यवधान से उत्पन्न दुष्परिणामों के कारण आज हमारा पर्यावरण एक चिन्ता तथा समस्या का विषय बन कर हमारे सामने उभरा है। पर्यावरण की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता के साथ उसकी सुरक्षा का मूल्यांकन आज की आवश्यकता है।

पर्यावरण के प्रति जागरूकता भारतीय समाज में आदिकाल से ही रही है। पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं का शुरू से ही प्रकृति से निकटतम सम्बन्ध रहा है। एक ओर महिलाऐं प्रकृति की उत्पादनकर्ता तथा संग्रहकर्ता का कार्य करती है, वहीं दूसरी ओर प्रबन्धक तथा संरक्षक की भूमिका का निर्वाह करती है। चाहे अन्तराष्ट्रीय स्तर हो, राष्ट्रीय स्तर हो अथवा क्षेत्रीय स्तर, महिलाओं ने पर्यावरण संरक्षण हेतु कई आन्दोलन चलाए और कुशलतापूर्वक उनका सफल संचालन भी किया। भारतीय सन्दर्भ में महिलाओं के पर्यावरण संरक्षण में अमूल्य योगदान को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। प्रकृति से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ाव होने के कारण महिलाएँ, विशेषकर ग्रामीण महिलाएँ इस बात से भली–भांति परिचित हैं कि स्वच्छ पर्यावरण ही जीवन का आधार है और पर्यावरण को बचाकर ही जीवन को सुरक्षित रखा जा सकता है। वे इस बात से भी परिचित हैं कि प्रकृति के साथ की गई छेड़–छाड़ का दुष्परिणाम आने वाली कई पीढ़ियों को भी भुगतना पडेगा। भारत में पर्यावरण–संरक्षण हेतु महिलाओं द्वारा किये गये आन्दोलनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सर्वप्रथम जोधपुर के खेतडी गॉव में अमृता देवी के नेतृत्व में वन संरक्षण से सम्बन्धित आन्दोलन हुआ था। वर्ष 1730 ई0 में जोधपुर के महाराजा अजीत सिंह को महल बनाने के लिए लकड़ी की आवश्यकता थी और इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु राज्य कर्मचारी खेतड़ी गाँव में पेडों को काटने के लिए पहुंच गये तभी अमृता देवी के नेतृत्व में 84 गाँवों के लोगों ने इनका विरोध किया और वे पेडों से चिपक गये। इस विरोध के दौरान 363 लोग मारे गये। कुल्हाडियों के प्रहार से अमृता देवी का क्षत–विक्षत शरीर जमीन पर गिर पड़ा। इसके पश्चात् अमृता देवी की तीन बेटियॉ आसुबाई, रत्नीबाई व भागुबाई भी पेड़ से लिपट गई और उनके सिर भी धड़ से अलग कर दिये गये। जब इस घटना की जानकारी महाराजा को हुई तो उन्होंने स्वयं खेतड़ी गॉव आकर पेडों के कटान का आदेश तत्काल वापस ले लिया और साथ ही यह आदेश दिया कि भविष्य में कोई भी हरा पेड नहीं काटेगा।

उत्तराखण्ड में जब पर्यावरण जागरूकता की बात आती है तो अन्तर्राष्ट्रीय जगत में 'चिपको वूमन' के नाम से प्रसिद्ध गौरा देवी का नाम सहज ही हमारे सामने उभर कर आता है। 1974 में चमोली ( उत्तराखण्ड) जिले के रैणी गॉव में पुरूषों

*शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, डी0 एस0 बी0 परिसर, कुमाऊॅ विश्वविद्यालय, नैनीताल

की अनुपस्थिति में श्रीमती गौरा देवी के नेतृत्व में महिलाओं ने पेड़ो से चिपकर वनों को भारी विनाश से बचाया। सन् 1962 में भारत चीन युद्ध के पश्चात् सरकार द्वारा सैन्य उद्देश्यों की पूर्ति हेतु रैंणी क्षेत्र की भूमि का अधिग्रहण किया गया था, जिसमें सड़कों के लिए अधिगृहित भूमि भी शामिल थी, परन्तु इस भूमि के बदले ग्रामीणों को मुआवजा नहीं दिया गया। रैंणी के वनों के पेड़ों के कटान के लिए नीलामी हो गई। एक सप्ताह पश्चात् सरकार द्वारा यह घोषणा की गई कि ग्रामीणों को भूमि का मुआवजा दिया जायेगा। इस घोषणा को सुनकर रैंणी के पुरूषों ने चमोली को प्रस्थान किया, सरकार की इस सुनियोजित योजना के बारे में महिलाओं को पहले से ही शक था, कि पुरूषों की अनुपस्थिति में वन विभाग वाले ठेका पाने वाले कम्पनी के मजदूरों के साथ पेड़ काटने आ सकते हैं, इसलिए वे सतर्क हो गई। जैसे ही मजदूर वन विभाग के कर्मचारियों के साथ पेड़ काटने के लिए आ रहे थे, एक छोटी बालिका ने उन्हें पहचान लिया तथा इनके आने की सूचना तुरन्त ही गौरा देवी को दी। गौरा देवी तुरन्त ही 27 महिलाओं के साथ वन की ओर बढ़ीं। गौरा देवी के नेतृत्व में सभी महिलाओं ने वन विभाग के कर्मचारियों तथा मजदूरों को पेड़ न काटने तथा वापस लौट जाने की सलाह दी। परन्तु कर्मचारी नहीं माने। गौरा देवी ने कहा, **''जंगल हमारा मायका है और पेड़ ऋषि हैं। यदि जंगल कटेगा तो हमारे खेत, मकान के साथ मैदान भी नहीं रहेंगे। जंगल बचेगा तो हम बचेंगे। जंगल हमारा रोजगार है।''** वन कर्मचारियों के न मानने पर गौरा देवी सहित अन्य महिलाऐं अपने प्राणों की चिन्ता न करते हुए पेड़ों में चिपक गई। इस प्रकार इस आन्दोलन में महिलाओं को काफी संघर्ष करना पड़ा। फलतः वन कर्मचारियों और मजदूरों को वापस लौटना पड़ा। यह घटना अपने आप में एक महत्वपूर्ण घटना है, क्योंकि इसमें महिलाओं ने पुरूषों की अनुपस्थिति में सूझ–बूझ तथा हिम्मत से अपनी जान की परवाह किये बगैर कार्य किया और रैंणी वन के 2451 पेड़ों को काटने से बचाया। इस आन्दोलन में बनी देवी, महा देवी, मुसी देवी, नृत्यी देवी, नीलामती, उमा देवी, हरकी देवी, बाली देवी, पासा देवी, रूक्का देवी, रूपसा देवी, तिलाडी देवी, इन्द्री देवी आदि शामिल थी। टिहरी जिले के हैवल घाटी क्षेत्र के अदवाणी गाँव की बचनी देवी ने भी चिपको आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। 30 मई 1977 को अदवाणी गाँव में जब वन निगम के ठेकेदार पेड़ों को काटने गये तो बचनी देवी ने गाँववासियों के साथ मिलकर पेड़ बचाओ आन्दोलन किया, ठेकेदारों के हथियार छीन लिये तथा उन्हें वहाँ से भागने के लिये मजबूर कर दिया। यह आन्दोलन लगभग एक वर्ष तक चला और इसके फलस्वरूप वन विभाग को पेड़ों के कटान पर रोक लगानी पड़ी।

1983 में चिपको आन्दोलन से प्रेरित होकर दक्षिण (कर्नाटक) में भी महिलाओं ने 'अप्पिको' आन्दोलन का सूत्रपात किया। यह आन्दोलन लगातार 38 दिनों तक चला और सरकार को मजबूर होकर अपना आदेश वापस लेना पड़ा।

उत्तराखण्ड़ के सन्दर्भ में रक्षासूत्र आन्दोलन भी विशेष महत्वपूर्ण है। इस आन्दोलन में मन्दोदरी देवी, जेठी देवी, सुषीला पैन्यूली, सुमती नौटियाल, बसन्ती नेगी, मीना नौटियाल, कुवरी कलूडा, गंगा देवी रावत, गंगा देवी चौहान, हिमला बहल, उमा देवी, विमला देवी, अनिता देवी और अन्य क्षेत्रीय महिलाओं ने, जो दिखोली, चौदियाट गाँव, खवाड़ा, भेटी, बूढा केदार, हर्षिल तथा मुखेम आदि कई गाँव से हैं, सक्रिय योगदान दिया। उत्तराखण्ड की महिलाओं ने 'रक्षा सूत्र' आन्दोलन की शुरूआत की जिसमें उन्होंने पेड़ों पर रक्षा धागा बांधते हुए उनकी रक्षा का संकल्प लिया। इस आन्दोलन के कारण महिलाओं का पेड़ों से भाईयों के जैसा रिश्ता बना। इसी के कारण भागीरथी, भिलांगना, यमुना, टौंस, धर्मगंगा, तथा बालगंगा आदि कई नदि जलग्रहण क्षेत्रों में वन निगम के द्वारा किए जाने वाले हरे पेड़ों के कटान पर सफलतापूर्वक रोक लगा दी गई और 1997 में टिहरी और उत्तरकाशी में लगभग 121 वन कर्मियों का वन मंत्रालय की एक जांच कमिटि के द्वारा निलंबन भी किया गया। इस आन्दोलन ने ''ग्राम वन'' के विकास तथा प्रसार पर भी ध्यान दिया। इसके अन्तर्गत ऐसे गाँवों में 'ग्राम वन' के संरक्षण हेतु पेड़ों पर रक्षासूत्र बांधे गये, जहाँ पर लोग परम्परागत तरीके से वनों का संरक्षण करते आ रहे हैं। गॉव आधारित चौकीदारी प्रथा से, ग्राम वन का प्रबंधन, वितरण तथा सुरक्षा की जाती है। इससे महिलाओं के कष्टमय जीवन को राहत मिलती है।

1995 में हिमालयी पर्यावरण शिक्षा संस्थान ने महिला संगठन के साथ मिलकर लगातार 400 छोटे तालाब बना दिये हैं। इसके साथ–साथ इस आन्दोलन ने अग्नि नियंत्रण के लिये जगह–जगह पर रक्षासूत्र आन्दोलन किया है। इस

आन्दोलन की सफलता ने वनों के प्रति एक नई दृष्टि का विकास किया। इसके बाद उत्तराखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग मुद्दों को लेकर वन आन्दोलन होने लगे। रक्षासूत्र आन्दोलन के द्वारा हर वर्ष अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस पर 'वन बचाओ' हेतु सम्मेलन किया जाता है, जिसमें प्रत्येक क्षेत्र से कार्यकर्ता वन संबंधी जानकारी उपलब्ध कराते हैं।

श्रीमती कलावती रावत, जो कि चमोली के बघेर गाँव की निवासी है, हिमालय क्षेत्र में महिला सशक्तीकरण का प्रतीक है। इन्होंने ग्रामीण महिलाओं को संगठित कर वनों की रक्षा तथा वनों से सम्बन्धित कानूनों को लागू करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इन्हें विश्व महिला शीर्ष सम्मेलन निधि, जनेवा का वर्श 2000 का 'ग्राम जीवन में रचनात्मकता' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस प्रकार इस पुरस्कार से सम्मानित होने वाली यह विश्व की 34वीं और जिला चमोली की दूसरी महिला है। कलावती रावत महिला मंगल दल को निरन्तर सक्रिय करते हुए दशौली ग्राम स्वराज्य मंडल के आन्दोलन से जुड गई। इन्होंने बघेर ग्राम में वन पंचायत प्रबंधन में भी महिला मंगल दल की सहभागिता बढ़ाई और उसमें व्याप्त अनियमितताओं का निवारण किया। इनके प्रयासों के फलस्वरूप ही पुरूष वर्चस्व वाली वन पंचायत महिलाओं के नियंत्रण (प्रशासनिक) में आ गई। श्रीमती कलावती देवी ने जल, जंगल और जमीन से जुड़ी ग्रामीण महिलाओं का प्रतिनिधित्व देश–विदेश में अनेक सम्मेलनों तथा संस्थाओं में किया। इस प्रकार ये नई पीढ़ी की महिलाओं के लिये प्रेरणा स्रोत बनी।

सुश्री राधा भट्ट, निवासी अल्मोड़ा, ग्राम धुरका, एक प्रख्यात पर्यावरण कार्यकत्री, समाज सेविका तथा लेखिका थीं। इन्होंने विकास कार्यो के लिए बेरीनाग ग्राम स्वराज्य मंडल की स्थापना की, जिसका ग्रामोद्योग विकास और पर्यावरण की सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान है। इन्होंने महिलाओं को जंगल रक्षा के कार्यक्रमों के लिए प्रेरित किया। सुश्री भट्ट ने पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए जंगलों और चारागाहों को विनाश से बचाने के लिए धीया पत्थर की खदानों में की जाने वाली खुदाई तथा विस्फोटों के विरूद्ध आन्दोलन छेड़ दिया। इससे सरयूं घाटी क्षेत्र में कई खदानें बन्द हो गयी, ग्रामवासियों को 300 एकड़ से अधिक जमीन का लाभ हुआ तथा 1 लाख 60 हजार से अधिक पेड़ लगाये गये तथा दूसरी ओर यहाँ की महिलाओं में आत्मविश्वास की भावना भी पैदा हुई।

चमोली के तिरोसी गाँव की, श्रीमती संग्रामी देवी, विगत 30 वर्षो से तनारोपण से पर्यावरण एवं भूमि संरक्षण जैसे कार्यों में समर्पित ग्रामीण महिला हैं। यह 'इन्दिरा प्रियदर्शिनी वृक्ष मित्र' सम्मान और 'वूमेन वर्ल्ड सम्मिट फाउण्डेशन' द्वारा सम्मानित उत्तर भारत की एकमात्र महिला है।

उत्तरकाशी के तिलोत गाँव की डॉ0 हर्षवन्ती बिष्ट भी एक पर्यावरण प्रेमी महिला है तथा पर्यावरण संरक्षण और हिमालयी पर्यटन पर इनके कई शोधपरक लेख भी प्रकाशित हो चुके हैं।

उत्तराखण्ड ही नहीं वरन् देश–विदेश में भी महिलायें पर्यावरण संरक्षण हेतु उल्लेखनीय योगदान दे रहीं हैं। केन्या की ग्रीन बेल्ट आन्दोलनकारी वंगारी मथाई, रूस की हाइड्रो–इलेक्ट्रिक डैम का विरोधकत्री मारिया चेरकासोरा (Maria Chercasora), अमेरिका की रशेल कारसन (Rachel Carson), भारत की प्रसिद्ध पर्यावरणविद् वन्दना शिवा, नर्मदा बचाओ आन्दोलनकारी मेधा पाटेकर तथा प्रसिद्ध पर्यावरणविद् तथा राजनीतिज्ञ मेनका गाँधी आदि ऐसी महिला नेतृत्त्वकर्त्री हैं, जिन्होंने पर्यावरण संरक्षण में अतुलनीय योगदान दिया है। इसके अतिरिक्त मिट्टी बचाओ आन्दोलन तथा गंगा शुद्धीकरण आन्दोलन भी जनता की पहल तथा जागरूकता ही परिणाम हैं।

लेकिन वर्तमान समय की प्रमुख समस्या यह है कि पर्यावरण संरक्षण केवल महिलाओं के कुछ समूहों के सहभाग से सम्भव नहीं है, अपितु वैश्विक स्तर पर महिलाओं को इनके लिए सहभाग करना होगा । पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रत्येक वर्ग तथा प्रत्येक क्षेत्र की महिलाओं के सहभाग की व्यापक आवश्यकता है अतः महिलाओं को अपनी भूमिका का अवलोकलन नहीं करना चाहिये।

वर्तमान समय में संस्कृति पतनोन्मुख है तथा पर्यावरण विघटन की ओर। ऐसे में मानव भौतिक रूप से जितना

सम्पन्न होता जा रहा है, सांस्कृतिक तथा पर्यावरणीय क्षेत्र में उतना ही विपन्न हो रहा है। परन्तु धन्य है उत्तराखण्ड की महिलाएं, जो सांस्कृतिक और धार्मिक आस्थाओं के बहाने प्राकृतिक धरोहरों के संरक्षण का सफल प्रयास कर संस्कृति और पर्यावरण दोनों को बचाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। इनका यह प्रयास न केवल अनुकरणीय है अपितु स्तुत्य भी है। ये समाज की ही नहीं वरन् प्रकृति की भी संरक्षिका है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –**

1– अग्रवाल, चन्द्र मोहन; 'उत्तराखण्ड के सानिध्य में,' प्रथम संस्करण, इण्डियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 2004

2– कुमार, राधा; 'स्त्री संघर्ष का इतिहास,' अनुवादक – रमा शंकर सिंह 'दिव्यदृष्टि', द्वितीय संस्करण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005

3– जोशी, लता; 'पर्यावरण की राजनीति,' अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2001

4– डबराल, शिवप्रसाद; 'उत्तराखण्ड का इतिहास,' प्रथम संस्करण, सुलभ प्रकाशन, लखनऊ, 1988

5– बलूनी, दिनेश चन्द्र; 'उत्तराखण्ड– संस्कृति, लोकजीवन, इतिहास एवं पुरातत्व,' प्रकाश बुक डिपो, बरेली, 2001

6– बिष्ट, शेर सिंह; 'मध्य हिमालयी समाज, संस्कृति एवं पर्यावरण,' इण्डियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 2003

7– नेगी, डॉ0 जगमोहन; 'राष्ट्रीय संस्कृति सम्पदा' – सांस्कृतिक पर्यटन एवं पर्यावरण, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002

8– सकलानी, एस0 पी0; 'उत्तराखण्ड की विभूतियां,' प्रथम संस्करण, उत्तरा प्रकाशन, रूद्रपुर, 2001

पत्र एवं पत्रिकाएं –

1– कुरूक्षेत्र, फरवरी, 2010

2– कुरूक्षेत्र, जून, 2012

3– पर्वत जन, नवम्बर, 2012

4– पहाड़–12, यात्रा अंक 2

5– योजना, ग्रामीण विकास मंत्रालय, मासिक पत्रिका, सितम्बर, 2007

Web Source –

www.parvatjan.com
www.indiawaterportal.org/articles
www.un.org/../WOM1325.doc.htm
www.en.wikipedia.org/wiki/women_and_the_environment
www.zenithresearch.org.in
www.wilsoncenter.org/article/scholar-studies-roles-women-environmental-conservation

अन्य –

पर्यावरण विमर्श, 2012